International Journal of Sanskrit Research 2018; 4(2): 50-51

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2018; 4(2): 50-51
© 2020 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 17-01-2018
Accepted: 21-02-2018

Dr. Deepak Mishra
Sanskrit Department, Veer Bahadur Singh Purvanchal University Jaunpur UP, Prayagraj, Uttar Pradesh, India

Corresponding Author:
Dr. Deepak Mishra
Sanskrit Department, Veer Bahadur Singh Purvanchal University Jaunpur UP, Prayagraj, Uttar Pradesh, India

पुराणों में पर्यावरणीय समृद्धि के निहितार्थ

Dr. Deepak Mishra

प्रस्तावना

विश्व वाङ्मय में वेदों का स्थान अप्रतिम है। लौकिक या पारलौकिक कोई भी ऐसा विषय नहीं है जिसका विवेचन वेदों में न हुआ हो। वेदों में संक्षेप रूप से वर्णित विषयों का ही पुराणों में आख्यान, उपाख्यान एवं कथाओं के द्वारा विशदीकरण हुआ है। इसलिए पुराणों को वेदों का भाष्य कहते हैं। प्राचीन काल का आदर्श और भारतीय संस्कृति का वास्तविक स्वरूप जानने के लिए पुराण सुलभ साधन हैं।[1] पुराण आर्य जाति के सर्वस्व हैं इन्हें आर्य जाति के सुविस्तृत प्रासाद के आधार–स्तम्भ, प्राचीन इतिहास–मन्दिर के सुवर्ण–कलश, विविध विज्ञान–समुद्र में तैरने वाले जहाज के प्रकाश–स्तम्भ, सनातन धर्मरूप शामियाने की डोरियाँ, मानव–समाज को संस्कृति का पथ–प्रदर्शन करने वाले दिव्य प्रकाश तथा आर्य जाति को अनादि काल से संचित विधाओं की सुदृढ़ मंजुषायें कहा जाय, तो कुछ भी अत्युक्ति न होगी।[2] वेद और पुराण स्वरूपतः अभिन्न हैं तथा वेद द्विज समुदाय में प्रतिष्ठित एवं अशिक्षित जन साधारण में अपरिचित हैं। किन्तु पुराण सभी श्रेणियों के नरनारियों के बीच विचरने वाले हैं और सबके मन को अनुरञ्जित करने वाले हैं।[3] पुराण विद्या का महत्व इससे स्पष्ट है कि याज्ञवल्क्य आदि महर्षियों ने विधाओं की गणना में पुराणविद्या को प्रथम स्थान दिया है।

पुराणन्यायमीमांसाधर्मशास्त्राङ्गमिश्रिताः।
वेदाः स्थानानि विद्यानां च चतुर्दश।।

वेद के तत्व को सर्वसाधारण को हृदयंगम कराने के लिए पुराणों की रचना की गयी। महाभारत का कथन है व्यक्ति इतिहास, पुराण से अपरिचित है, उससे वेद सदा डरा करता है कि वह मेरे अर्थ के ऊपर प्रहार न करे–

इतिहासपुराणाभ्यां वेदं समुपबृंहयेत्।
विभेत्यल्पश्रूवाद् तेदो मामयं प्रहरिष्यति।।[4]

भारतीय संस्कृति और परम्परा को रोचक और सरल भाषा में जनसाधारण तक पहुँचाने का श्रेय इसी साहित्य को है।[5] न केवल कविकुलकलाधर कालिदास, भास, माघ, भारवि, भवभूति, श्रीहर्ष प्रभृति भारतीय अमर महाकवियों ने पुराणों को अपने–अपने महाकाव्यों का आधार बनाया है, किन्तु टालस्टाय, होमर, मिल्टन, शेक्सपियर आदि पाश्चात्य लेखकों के ग्रन्थों के परिशीलन से मालूम पड़ता है कि उन्होंने भी यत्र–तत्र पौराणिक आख्यानों से अपने ग्रन्थों को सजाने में कोई कोर–कसर नहीं रखी है।[6] वैदिक वाङ्मय के समान ही पौराणिक वाङ्मय में भी पर्यावरण एवं उसके संरक्षण के उपायों का बहुधा उल्लेख हुआ है। प्रकृति अथ च पर्यावरण के विभिन्न रूप प्रसंगानुसार निरूपित हुए हैं और तीर्थों के प्रसंग में शौचाचारों का वर्णन, प्रयोग विधि और अपकृत्य–निषेध–यह सब पर्यावरण को प्रदूषित न करने तथा उसका सन्तुलन बनाए रखने के लिए किया गया। वृक्षों को न काटने का निर्देश, आराम–कूप–वापी का निर्माण कराकर उसका उत्सर्ग करने से पुण्य की प्राप्ति इत्यादि विधियाँ मानव के साथ–साथ पर्यावरण का भी कल्याण करती हैं।[7]

तात्विक दृष्टि से विचार करने पर यज्ञ पर्यावरण का मूल कारण है। पर्यावरण की सुरक्षा और उसका सन्तुलन बनाए रखने के लिए यज्ञों की महती उपादेयता है। वैदिक, पौराणिक और लौकिक संस्कृत वाङ्मय में विविध यज्ञानुष्ठान किए जाते हैं। देवों की प्रसन्नता का अभिप्राय है पर्यावरण की स्वच्छता और उसकी यथास्थिति अथ च सन्तुलन। मानवों के अनाचार से देवता अप्रसन्न होते हैं और दैवप्रकोप से अनेक प्रकार के उत्पात और अमंगल होते हैं। अतिवृष्टि, अनावृष्टि–खण्डवृष्टि, कीटादिप्रकोप,

तूफान, भूस्खलन, उल्कापात आदि दैवी आपत्तियाँ पर्यावरण के असन्तुलन से होती हैं। अग्निहोत्रादि से, विविध यज्ञानुष्ठानों से इस प्रकार की विपत्तियों का उपशम शक्य है और प्रकृति अथवा पर्यावरण की प्रसन्नता प्राप्त की जा सकती है।[8] मत्स्यपुराण में इस उद्देश्य से यज्ञानुष्ठान करने का उपदेश दिया गया है–

समिद्भिः क्षीरवृक्षाणां सर्षपैश्च घृतेन च।
होमं कुर्यादग्निमन्त्रैर्ब्राह्मणांश्चैव भोजयेत्।।[9] मत्स्यपुराण 231.10

पुराणों में नदियों का पर्याप्त वर्णन प्राप्त होता है। भौगोलिक दृष्टि से तो यह महत्वपूर्ण है ही धार्मिक दृष्टि से भी अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं। नदियाँ न केवल पर्यावरण की अंग हैं। अपितु राष्ट्रजीवन की धमनी हैं। वे किसी भी देश की ऐतिहासिक और सांस्कृतिक निधि परम्परा की गतिशीलता की पर्याय हैं। उनका अक्षुण्ण प्रवाह उस देश की संस्कृति आध्यात्मिक अनुभूति के उत्तम स्थान माने जाते हैं। इन नदियों में स्नान करना पुण्यप्रद है। मत्स्यपुराण में ही नर्मदा नदी की महिमा का प्रतिपादन इस प्रकार किया गया है–

नर्मदा सरितां श्रेष्ठा सर्वपापप्रणाशिनी।
तारयेत् सर्वभूतानि स्थावराणि चराणि च।।[10] मत्स्यपुराण–186.8

ग①ा जल की पुण्य प्रशस्ति करते हुए कहा गया है–

चान्द्रावणसहस्त्राणां यत्फलं परिकीर्तितम्।
ततः शतगुणं पुण्यं ग①ामुंडषतो भवेत्।।

अर्थात् हजारों चान्द्रायणव्रत करने से जो पुण्यफल कहा गया है, उससे सैकड़ों गुना ग①ा के चुल्लूभर जल के स्पर्श से होता है। कूर्म पुराण मैं ग①ायमुनयोर्माहात्म्य वर्णन नैसर्गिक है–

येनैव निःसृता ग①ा तेनैव यमुना गता।
योजनानांसहस्त्रेषु कीर्त्तनात्पापनाशिनी।।[11] कूर्मपुराण–39.2

देवी देवताओं के साथ अनेक पशु–पक्षियों को सम्बद्धकर उनकी महिमा को स्वीकार किया गया है। गाय को इन पशुओं का प्रतिनिधि भूत माना गया है और उसे माता का सम्मान प्रदान किया गया है। वस्तुतः गाय हमारी आर्थिक और सांस्कृतिक व्यवस्था का आधार है। गाय वस्तुतः पवित्रता का पर्याय है। वह इहलोक के साथ ही परलोक में भी कल्याणकारिणी मानी गयी है। सनातन धर्म–परम्परा में 'प◈चगव्य' पवित्रीकरण का परमदिव्य साधन है। गोदुग्ध–दधि–घृत के अतिरिक्त गोमय और गोमूत्र भी पवित्र है तथा अपवित्र अन्तः बाह्य को पवित्र करते हैं। गांवों में घरों को गोमय से लिप्त करके संवारते हैं। गोमूत्र का सेवन (पान–लेपन) अनेक रोगों से मुक्त करता है।[12] पुराणों में सांस्कृतिक चेतना व प्रकृति प्रेम का अमर सन्देश के अन्तर्गत शिव को ही प्रकृति पुरुष, पशुपति, बिल्व, वन व शिवमय प्रकृति यज्ञादि का उल्लेख वर्ण्य है। शिव पुरुष व पार्वती प्रकृति के माध्यम से लोक में 'सत्यं–शिवं–सुन्दरम् का यथार्थ रूप प्राकृतिक सौन्दर्य और पर्यावरण संरक्षण का ही द्योतक है।[13] इसी प्रकार वृक्षारोपण करना और उद्यान लगाकर उसका उत्सर्ग करना परमपुण्यप्रद कहा गया है। अभिप्राय यह है कि वृक्षारोपण करने वाला कभी नरकगामी नहीं होता। एक वृक्ष लगाना हजार पुत्रों के बराबर होता है। पर्यावरण में सन्तुलन बनाये रखने के लिए लोकोपकार की भावना से जलाशयों और उपवनों का निर्माण कराकर उत्सर्ग (लोकहित के लिए सार्वजनिक समर्पण) करना धार्मिक दृष्टि से अत्यन्त पुण्यप्रद माना गया।

संदर्भ ग्रन्थ

1. पुराण तत्व मीमांसा–श्रीकृष्णमणि त्रिपाठी, हिन्दी प्रचारक मण्डल, लखनऊ, संस्करण 1961 पेज, प्रकाशकीय।
2. पुराण परिशीलन–पं0 गिरिधर शर्मा चतुर्वेदी–प्रस्तावना पेज–1 बिहार– राष्ट्रभाषा–परिषद, पटना संस्करण 1970।
3. पुराण तत्व मीमांसा– पेज–6
4. वामन पुराण का सांस्कृतिक अध्ययन–डा0 (श्रीमती) मालती त्रिपाठी, पृष्ठ–प्रस्तावना–17, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग संस्करण 1993।
5. अग्नि पुराण का काव्यशास्त्रीय भाग–रामलाल वर्मा शास्त्री, पेज–1 भूमिका नेशनल पब्लिसिंग हाउस, दिल्ली, संस्करण 1959
6. पुराण तत्व मीमांसा– श्रीकृष्णमणि त्रिपाठी, हिन्दी प्रचारक मण्डल, लखनऊ, संस्करण 1961 पेज प्रकाशकीय, पेज–7
7. संस्कृत वाङ्मय और पर्यावरण–संरक्षण– डा0 प्रभुनाथ द्विवेदी पेज–75 महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी, संस्करण–1996
8. संस्कृत वाङ्मय और पर्यावरण–संरक्षण– डा0 प्रभुनाथ द्विवेदी पेज–77–78 महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी, संस्करण–1996
9. मत्स्य पुराणम् (उत्तर भागः)–राम प्रताप त्रिपाठी शास्त्री, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग संस्करण–1988 पेज–233
10. मत्स्य पुराणम् (उत्तर भाग)–राम प्रताप त्रिपाठी शास्त्री, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग संस्करण–1988 पेज–130
11. कूर्म पुराण (प्रथम खण्ड) श्री राम शर्मा आचार्य– संस्कृति संस्थान, बरेली, संस्करण 1970 पेज–445
12. संस्कृत–वाङ्मय और पर्यावरण संरक्षण पेज–81, 82
13. संस्कृत वाङ्मय में पर्यावरण– डॉ0 शंकर लाल शास्त्री पेज–37 हंसा प्रकाशन, जयपुर संस्करण 2009